सूर्य भगवान
चक्र
शंख
श्री गणेश
गदा
ॐ कार
स्वस्तिक
ब्रह्मदेव
महादेव
वामन
परशुराम
नृसिंह
श्रीराम
वराह
श्रीकृष्ण
कूर्म
बुद्ध
मत्स्य
कल्कि
कोदंड
हनुमान
गरुड़
सहस्त्रदलकामल
DHARMIK_SPACE

राम एव परं ब्रह्म, राम एव परं तपः ।।
राम एव परं तत्त्वं, श्रीरामो ब्रह्म तारकम्।।

राम रहस्य उपनिषद

राम ही परम ब्रह्म हैं। राम ही परम तपःस्वरूप हैं। राम ही परम तत्त्व हैं। वे राम ही तारकब्रह्म हैं ।

राम ब्रह्म परमारथ रूपा। अबिगत अलख अनादि अनूपा॥
सकल बिकार रहित गतभेदा। कहि नित नेति निरूपहिं बेदा॥4॥

भावार्थ

श्री रामजी परमार्थस्वरूप (परमवस्तु) परब्रह्म हैं। वे अविगत (जानने में न आने वाले) अलख (स्थूल दृष्टि से देखने में न आने वाले), अनादि (आदिरहित), अनुपम (उपमारहित) सब विकारों से रहति और भेद शून्य हैं, वेद जिनका नित्य 'नेति-नेति' कहकर निरूपण करते हैं॥4॥

श्रीरामसन्निध्यवशाज्जगदानन्दकारिणी।
उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिणी सर्वदेहिनाम् सीता भगवती ज्ञेय मूलप्रकृतिसंज्ञिता प्रणवत्प्रकृति वदन्ति ब्रह्मवादिन इति अथातो ब्रह्मजिज्ञसेति च ॥

श्री सीता को भगवान श्री राम का निरंतर साथ प्राप्त है, जिसके कारण वह जगत का कल्याण करने वाली हैं। वे ही समस्त प्राणियों की उत्पत्ति, स्थिति और विनाश हैं। भगवती सीता को प्रकृति का आदि स्वरूप जानना चाहिए। उनके व्यभिचारी स्वभाव के कारण ब्रह्मवादी उन्हें 'प्रकृति' कहते हैं। ब्रह्म सूत्र, " अथातो ब्रह्मा जिज्ञासा" में उनके स्वरूप को दर्शाया गया है।

ॐङ्कारत्परतो राम वाइंस्पर्वतः ।

तत्परत्वे कर्मज्ञानमयीभिर्बहुशाखा भवन्ति ॥

'ओम' से परे राम के रूप में वैखानस पर्वत है । ज्ञान और कर्म रूपी उस पर्वत की अनेक शाखाएँ हैं।

एकविंशतिशाखायामृग्वेदः परिकीर्तितः। शतं च नवशाखासु यजुषामेव जन्मनाम समानः सहस्रशाखाः स्यूः पंचशाखा अथर्वणः। वैखानसमतस्तस्मिन्नादौ प्रत्यक्षदर्शनम् स्मर्यते मुनिभिर्नित्यं वैखानसमतः परम्

ऋग्वेद की इक्कीस शाखाएँ, यजुर्वेद की एक सौ नौ शाखाएँ, सामवेद की एक हजार शाखाएँ और अथर्ववेद की पाँच शाखाएँ हैं। वेदों में वैखानस सम्प्रदाय को प्रथम प्रत्यक्ष दर्शन (प्रत्यक्ष दर्शन) माना गया है। इसीलिए संत सदैव परम वैखानस श्री राम का ध्यान करते हैं ।

सर्ववेदान्तसारसिद्धान्तार्थकलेवरम् ।
विकलेवरकैवल्यं रामचन्द्रपदं भजे ॥

यजुर्वेद श्रुति सर्वसार उपनिषद

सभी वेदांतों के सभी सिद्धांत विशेष रूप से केवल श्री राम को ही समर्पित हैं।

यन्महावाक्यसिद्धान्तमहाविद्याकलेवरम् ।
विकलेवरकैवल्यं रामचन्द्रपदं भजे ॥

अथर्ववेद श्रुति महावाक्य उपनिषद

वेदों के सभी महा-वाक्य महा-विद्या भी केवल श्री राम के लिए निर्धारित हैं।

महावाक्यबोधकैः विराजमानवाक्पदैः ।
परं ब्रह्म सद् व्यापकं भजेऽहम् राममद्वयम् ॥ ७ ॥

Skandpuran Nirvana khand

वे मैं एकमात्र भगवान राम, परम परम सत्य, सर्वव्यापी परम सत्य की पूजा करता हूं जो उन शब्दों से प्रकाशित थे जो महान शब्दों को व्यक्त करते थे।

ॐ नमो भगवते उत्तमश्लोकाय नम आर्यलक्षणशीलव्रताय नम उपशिक्षितात्मन उपासितलोकाय नमः साधुवादनिकषणाय नमो ब्रह्मण्यदेवाय महापुरुषाय महाराजाय नम इति

(भागवत 5.19.3)

यहां शुकदेव जी कह रहे हैं कि हनुमान जी इसी मंत्र से हनुमान जी का अर्चन करते हैं –

यहां "उत्तम श्लोकाय" अर्थात हे प्रभु आप ही उत्तम श्लोकों द्वारा उपासित हैं

शिव उवाचः-

एक एव च त्वं वचनैः अनेकैः निरुप्यसे सद्भिः अनन्त बोधा।

वेदेषु शास्त्रेषु पुराणवाक्येषु अखंड वाक्यार्थ तया प्रतिष्ठिता।।

Aadi Ramayan

शिव जी कहते हैं:-हे श्री राम! एकमात्र आपको ही अनेकों अनेक वैदिक, पुराणिक तथा शास्त्रिय महावाक्य अखंड अर्थ के द्वारा निरुपण किया गया है।

वैदिक महावाक्यः-

पूर्णात् पूर्णम् उदच्यते

प्रज्ञानं ब्रह्म" (ऐतरेय उपनिषद् ३.३, ऋगवेद)

अयं आत्मा ब्रह्म" (मांडूक्य उपनिषद् १.२, अथर्ववेद)

तत् त्वम् असि" (छान्दोग्य उपनिषद् ६.८.७, सामवेद)

अहम् ब्रह्मास्मि" (बृहदारणयक उपनिषद् १.४.१०, यजुर्वेद)

ईसावास्यं इदम् सर्वम् (ishavasya upanishad)

उग्र वीरं महाविष्णुं (narsimha tapani upanishad, agnipuran, tripad vibhuti maha narayan upanishad, narad puran, ahirbudnya samhita)

एको वै नारायण आसीत् (पैंगीरहस्य ब्राह्मण, महा उपनिषद, नारायण अथर्वशीर्ष, त्रिपाद् विभुति नारायण उपनिषद)

ऋतं सत्यं परंब्रह्म (narayan suktam)

एको देवो सर्वभुतेषू (swetshweteswar upanishad, gopal tapani upanishad)

Ekoham bahusyamah …Taitriya upanishad

Ekam sat bahudha viprah vadanti…rigveda

Ekaki na ramate… maha upanishad and Brihadaranyak Upanishad 1.4.3

तदैक्षत बहु स्यां प्रजायेयेति...chandogya upanishad 6.2.3

सोऽकामयत । बहु स्यां प्रजायेयेति । ... तैत्तिरीयोपनिषत् २-६-४

नारायण परो ज्योतिरात्मा नारायणः परः ।

नारायण परं ब्रह्म तत्त्वं नारायणः परः ।

नारायण परो ध्याता ध्यानं नारायणः परः ॥4॥

नारायण सुक्त

आदि वैदिक महावाक्य

१)<u>सत्य संकल्प</u>

सत्यसंकल्प सत्यात्मनः सत्यपालनसुव्रत।

सत्यस्य अपि महासत्य सत्यदेव नमोस्तुते।।

आदि रामायण

सत्यसंकल्प (एष आत्मा........सत्यकामः सत्यसंकल्पः.....इति Chandogya Upanishad 8.1.5), सत्य आत्मा, अपनी सत्य प्रतिज्ञा के प्रति पालन करने वाले, हे सत्य के भी महान सत्य, हे सत्य के स्वामी श्री राम, मैं आपको नमस्कार करता हूं।

True to his resolve(**एष आत्मा........सत्यकामः सत्यसंकल्पः.....इति Chandogya Upanishad 8.1.5),** true to his soul, true to his vows. O great truth even of truth, O Lord of truth Shri Ram, I offer my obeisances unto thee.

2)

एको रामः सर्वभुतान्तरात्मा सर्ववास सर्वकल्याणभुमा।

आदि रामायण १.५.१२क

राम ही एकमात्र समस्त प्राणियों के अन्तर्यामी (एको देवः .... सर्वभूतान्तरात्मा....Swetsweteshwar upanishad), सबके निवास स्थान तथा समस्त कल्याण की भूमि हैं।

Rama alone is the innermost Self of all beings (एको देवः .... सर्वभूतान्तरात्मा....Swetsweteshwar upanishad) and the abode of all and the land of all welfare.

3)

स एष सर्वभूतान्तरात्मापहतपाप्मा दिव्यो देव एको नारायणः ॥

Subal upanishad sashtam khand and adhyatm upanishad shlok 1

त्वम् सर्वान्तरात्मापहतपाप्मा दिव्यो देव एको रामचन्द्रः॥

आदि रामायण १.२९.१४

4)

भी॒षाऽस्मा॒द्वातः॑ पवते । भी॒षोदे॑ति॒ सूर्यः॑ ।
भीषाऽस्मादग्नि॑श्चेन्द्र॒श्च । मृत्युर्धावति पञ्च॑म इ॒ति ।

Taitriya upanishad 2.8.1

From fear of him, the wind blows, from fear of him, sun rises, from fear of him, five divinities (Agni, Indra, mrityu etc) work

भयादस्याग्निस्तपति भयात्तपति सूर्यः
भयादिन्द्रश्च वायुश्च मृत्युर्धावति पञ्चमः।

Kath upanishad 2.3.3,12

For fear of Him the Fire burns : for fear of Him the Sun gives heat : for fear of Him Indra and Vayu and Death hasten in their courses.

कालस्य अपि भयं यस्मात् विश्वतः कलनात्मनः।

सुर्य्यस्य नित्यं भ्रमतो मरुतस्य सदागतेः।।

अन्येषां च अपि देवानाम् मर्यादा संस्थितानाम्।

यतो भयं नित्यं एव महासंहरण आत्मनः।।

स्थावराणां जंगमानाम् यत् एव अस्ति संस्थितिः।

स्वे स्वे स्थाने स्थापितानां न अद्य अपि अस्ति व्यतिक्रमः

प्रभुणां च अपि सर्वेषां एव च यः प्रभुः।।

Aadi Ramayan

Even fear of time from which the universe is calculated.

The sun is always moving and the wind is always coming.

And also of other gods who have established the limits.

Because fear is always the great destroyer of the self.

That is the state of movable and immovable things.

There is no transgression even today for those who have been placed in their respective places

He who is the Lord of the Lords and of all the Lords.

5)

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रेऽस्तं गच्छन्ति नामरूपे विहाय ।
तथा विद्वान्नामरूपाद्विमुक्तः परात्परं पुरुषमुपैति दिव्यम्

Manduka upanishad 3.2.8

Just as rivers flowing become lost in an ocean, giving up both their name and form, just so, the knower, freed from name and form, attains the bright Purusha which is beyond the avyakta.

यथा नद्यः स्यन्दमानाः समुद्रम् एव अभिसंविशन्ति तथा एतानि नामानि सर्वाणि पुरुषं त्वाम् अभिसंविशन्ति।।

आदि रामायण १.२९.१२

हे श्रीराम! जैसे कि नदियों समुद्र में विलीन हो जाती है तब वे अपना रुप और नाम त्याग देते हैं, ठीक वैसे ही ये सारे भगवन नाम आपमे विलीन हो जाता है।

6)**Tad vishnoh param padam**

Rigveda 1.22.20

Gopal tapani upanishad verse 27

Kathopnishad 3.9

Paingalopnishad

Vishnu Puran 1.2.16

यत् प्राप्नुवन्ति सद् भक्ता भजन्तो नियतं प्रभुम्।
तत् कीर्तितं श्रुतिगणै राम एव परम पदम्।।

आदि रामायण page 942 shlok 106

जो अच्छे भक्त स्थिर भगवान की पूजा करके प्राप्त करते हैं। वे राम ही वेदों द्वारा वर्णित परमधाम हैं

7)

स **यो ह वै तत् परमं ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति नास्याब्रह्मवित्कुले भवति ।**

तरति शोकं तरति पाप्मानं गुहाग्रन्थिभ्यो विमुक्तोऽमृतो भवति ॥ ९ ॥

Sa yo ha vai tat paramaṃ brahma veda brahmaiva bhavati nāsyābrahmavitkule bhavati |

Tarati śokaṃ tarati pāpmānaṃ guhāgranthibhyo vimukto'mṛto bhavati || 9 ||

3.2.9. He who knows that highest Brahman becomes even Brahman; and in his line, none who knows not the Brahman will be born. He crosses grief and virtue and

vice and being freed from the knot of the heart, becomes immortal.

Mundaka Upanishad (3.2.9) says brahmavit brahmaiva bhavati, the knower of Brahman becomes Brahman

यो ब्रह्म वेद ब्रह्म एव भवति इति श्रुतेर्मतम्।
तस्माद् अपि उत्तमो श्रीमन् श्रीरामः पुरुषोत्तमः।।

आदि रामायण

शास्त्रों के अनुसार जो ब्रह्म को जानता है वह ब्रह्म हो जाता है। उनसे भी श्रेष्ठ परम पुरूषोत्तम श्री राम हैं।

यो वेद परमं ब्रह्म स ब्रह्म भवति इति च।
सर्व समुदितं यस्मात् तद् राम ब्रह्माघद्घनम्।।

आनंद रामायण

जो उस परम ब्रह्म को जानता है वो साक्षात् ब्रह्म हो जाता है। जिससे से यह संसार बना है वह श्रीराम चिद्घनानन्द ब्रह्म है।

8)

सर्वं समुदितं यस्मात् तद् राम ब्रह्मचिद्घनम्।

पुर्णमदः पुर्णम् इति कंडिकायां समासतः।।

आनंद रामायण ९.४.२१५

जिससे यह संपुर्ण संसार बना है, वह श्रीराम ही चिद्घनस्वरुप ब्रह्म है। **कण्डिकाओं में भी संक्षिप्त रुप से इसी प्रकार कहा गया है कि** ***"पुर्णमदः पुर्णमदं***.." एकमात्र श्रीराम के लिए प्रयोग हुआ है (क्योंकि श्री राम परिपुर्णतम ब्रह्म हैं)

The one from whom this entire world Is created, that Shri Ram is Brahm. **It is also briefly stated in the Kandikas that "Purnamadah Purnamidam…"** has been used only for Shri Ram (because Shri Ram is the most complete Brahma).

9)**प्रज्ञानं ब्रह्म**, ऋग्वेद का महावाक्य है, जिसका शाब्दिक अर्थ है – "प्रज्ञान ही ब्रह्म है"। यह महावाक्य ऋग्वेद के ऐतरेय उपनिषद में आया है। चार वेदों में चार महावाक्य है।

ऐतरेय उपनिषद के अन्त में सार रूप में आया है कि-

एष ब्रह्मैष इन्द्र एष प्रजापतिरेते सर्वे देवा इमानि च पञ्चमहाभूतानि पृथिवी वायुराकाश आपो ज्योतींषीत्येतानीमानि च क्षुद्रमिश्राणीव । बीजानीतराणि चेतराणि चाण्डजानि च जारुजानि च स्वेदजानि चोद्भिज्जानि चाश्वा गावः पुरुषा हस्तिनो यत्किञ्चेदं प्राणि जङ्गमं च पतत्रि च यच्च स्थावरं सर्वं तत्प्रज्ञानेत्रं प्रज्ञाने प्रतिष्ठितं प्रज्ञानेत्रो लोकः प्रज्ञा प्रतिष्ठा **प्रज्ञानं ब्रह्म ॥**

(अर्थ : यह ब्रह्म है, यह इन्द्र है, यह प्रजापति है। ये समस्त देवता तथा ये पृथ्वी, वायु, आकाश, जल और तेज—इस प्रकार ये पाँच महाभूत तथा ये छोटे-छोटे मिले हुए से बीजरूप समस्त प्राणी और इनसे भिन्न दूसरे भी अंडज, जरायुज, (जो गर्भ से उत्पन्न हुए हैं), स्वेदज (पसीने से उत्पन्न होने वाले) और उद्भिज (भूमि से निकलने वाले) तथा घोड़े, गायें, हाथी, मनुष्य जो कुछ भी यह जगत् है, जो भी कोई पंखो वाला और वह चलने-फिरने वाला और नही चलने वाला प्राणि समुदाय है, वह सब प्रज्ञा रूपी नेत्रो वाले हैं और प्रज्ञान पर ही प्रतिष्ठित (बैठे हुए) हैं। यह समस्त

ब्रह्माण्ड, प्रज्ञा रूपी नेत्रों वाला है। प्रज्ञान ही इस स्थिति का आधार है। यह प्रज्ञान ही ब्रह्म है।)

प्रज्ञानादिमहावाक्यरहस्यादिकलेवरम्।
विकलेवरकैवल्यं त्रिपाद्राममहं भजे ॥

शुकरहस्य उपनिषद

वेदांत महावाक्य जैसे प्रज्ञानं ब्रह्म आदि जिन परमात्मा का निरुपण करता है वे एकमात्र श्री राम हैं।

प्रज्ञानं ब्रह्म श्रुत्यान्ते त्रिकालेष्वितिदर्शितम्।
तद् राम सच्चिदानन्दघन अनन्तं न संशयः।।

आनंद रामायण ९.४.१८६ख &१८७क

ऋग्वेदीय श्रुति ऐतरय उपनिषद का वचन ३कालो में यही बतलाता है कि श्रीराम ही सच्चिदानन्द अनंत है।

The verse of Rig Vedic Shruti Aitaray Upanishad "Pragnanam Brahma" tells in three words that Shri Ram is Sachchidanand Anant.

10)

सत्यब्रह्माभिसंधस्येत्येव सद् ब्रह्म कीर्तनम्।
तद् रामेति परं ब्रह्म सृष्टिस्थित्यंत हेतुकम्।।

आनंद रामायण ९.४.१९९

सत्यरुप ब्रह्म में जिसकी लग्न रंग जाती है उसका इतना ही ब्रह्म कीर्तन है कि श्रीराम ही परंब्रह्म है। उन्हीं के द्वारा इस जगत की सृष्टि, स्थिति और अंत होता है।

The one who is immersed in **Satyarup Brahman**, his only Brahma Kirtan is that Shri Ram is the Supreme Brahma. It is through Him that this world is created, established and destroyed.

11)

Tat tvam asi/ तत् त्वम् असि

न रामात् परतः किंचित् तत् त्वम् अस्ति निरुपितम्।
श्रुतिभिश्च अपि उपनिषद गणैः सर्वान्तभाषणैः।।

आदि रामायण

राम से परे कुछ भी नहीं है जिसे धर्मग्रंथों और उपनिषदों और सर्वव्यापी प्रवचनों द्वारा "**तत् त्वम् असि**" परिभाषित करते हैं।

तत् त्वम् असि वेदान्त महावाक्य उपपादितम्।
निर्वक्ति मंत्र तत्व अर्थम् इति राम नमोस्तुते।।

Skan Puran nirvan khand ram gita

Salutations to bhagwan shri Ramchandra whom vedant (siddhant of vedas) prove by mhavakya like “tat tvam asi”

भगवान श्री रामचन्द्र को नमस्कार है जिन्हें वेदांत (वेदों के सिद्धांत) ने “तत् त्वम् असि” जैसे महावाक्य से सिद्ध किया है।

रकारस्तत् ज्ञेय स्त्वम् आकार उच्यते।

मकारोऽसि पदं ज्ञेयं तत् त्वम् असि सुलोचने।।

वेद सार महावाक्यं यत् तत् त्वम् असि कथ्यते। रामनाम्नाश्च तत् त्वम् असि रमुक्रीडा प्रवर्तते।।

Maha ramayan

R signifies tat

A signifies tvam

M signifies asi

By the word “ram” jist of veda maha vakya “tat tvam asi” is proved

Hence “tat tvam asi” also refers to bhagwan shri Ramchandra.

र तत् का प्रतीक है

अ त्वम् का प्रतीक है

म असि का प्रतीक है

“राम” शब्द से वेद महावाक्य का सार “तत् त्वम् असि” सिद्ध होता है इसलिए “तत् त्वम् असि” का तात्पर्य भगवान श्री रामचन्द्र से भी है।

12)

Raso vai sah

श्रीरामएवरसोवैसः। यस्यदासरसोवैपादः । यस्य शान्तरसो वै शिरः । वात्सल्यः प्राणः । शृङ्गारो बाहू | संख्यात्मा |

(Atharvaveda Pippalad Shakhayam)

That Raso Vai Saḥ is Śrī Rāma alone. Whose dasya rasa is his feet, shanta rasa is head, Vätsalyā rasa is Prān, Sringāar rasa is arm and Sakhya rasa is soul.

वह रसो वै सः ही श्री राम हैं। जिसका दास्य रस उसके पैर हैं, शांत रस है सिर, वात्सल्य रस है प्राण, श्रृंगार रस है भुजा और सख्य रस है आत्मा।

Raso vai saḥ.

Taitriya upanishad

The Supreme Lord is the reservoir of all pleasure.” All the Vedic scriptures, including the Purāṇas, the Vedas, the Upaniṣads and the Vedānta-sūtra, teach the living entities how to attain the stage of rasa

परमेश्वर सभी सुखों का भंडार है।” पुराण, वेद, उपनिषद और वेदांत-सूत्र सहित सभी वैदिक शास्त्र, जीवों को रस की अवस्था प्राप्त करने की शिक्षा देते हैं।

आत्मा एव रस एव एष आनंदयति च अखिलान्।

आनंद रामायण ९.४.१९३क

आत्मा(श्रीराम) ही रस है और वे ही समस्त संसार को आनंदित करता है।

The soul (Shri Ram) is the Rasa and it is he who makes the whole world happy.

तादृग् रस विशिष्टं तत् श्रीरामस्य परं वपुः।
ध्येयं गेयं च पेयं रस विद्धि निरन्तरम्।
श्रीरामस्य गुणैः पुर्णः परमानन्द विग्रह।।

आदिरामायण ३.६२.८ख &९

Such a rasa is distinctive and that is the supreme form of Sri Rama. Know the rasa to be meditated upon, sung and drunk constantly.The idol of supreme bliss is full virtues of Sri Rama.

ऐसा रस विशिष्ट है और वही श्री राम का सर्वोच्च रूप है। ध्यान करने योग्य, गाने वाले और निरंतर पीने योग्य रस को जानो। परम आनंद की मूर्ति श्री राम के पूर्ण गुण हैं।

रसो वै स इति प्राहु सर्वार्थ लोकिनी श्रुतिः।
श्रुत्युक्तं स रसः शुद्धः श्रृंगार इति कीर्तितः।

आदि रामायण ३.६२.६

That is the rasa, they say, the worldly scripture for all purposes. That rasa, as stated in the Srutis, is called pure shringar.

दृष्टाते विविधा लीलाः समस्त रस संगता।

रसो नाम भवद् रुपं ब्रह्म एवेदं न संशयः।।

आदि रामायण ४.३१.१

Various pastimes (विविधा लीला) are seen with all the rasa(समस्त रस संगता) .**Rasa is your (shri ram) form** and this (Shri Ramchandra) is undoubtedly Brahman.

सभी रसों के साथ विभिन्न लीलाएँ (विविध लीलाएँ) देखी जाती हैं। **रस आपका (श्री राम) रूप है** और ये (श्री रामचन्द्र) निस्संदेह ब्रह्म हैं।

रसेनैवामुना सर्वे जीवा जीवन्ति नान्यथा।

इमं रसमयं लब्ध्वा भवंत्यानन्दिनोऽखिलाः।।

विशता येन विश्वेषु सर्वं चेतयते जगत्।

न तं चेतयते कश्चित् स राम इति कीर्त्यते।।

आनंद रामायण

इसी रस (आनंद) से संसार के सब जीव जीते हैं, इस सरस पद को पाकर लोग आनंदमय हो जाते हैं। जो जगत् में प्रविष्ट होकर सारे जगत को चैतन्य कर देता है। जिस राम को चैतन्य करनेवाला कोई भी नहीं, वे ही राम राम कहे जाते हैं।

13)

अणोरणीयान् महतो महीयान्
आत्मा गुहायां निहितोऽस्य जन्तोः ।
तमक्रतुं पश्यति वीतशोको
धातुः प्रसादान्महिमानमात्मनः ॥

- श्वेताश्वतरोपनिषत् ३-२०

अणोरणीयान्महतो महीयानात्मास्य जन्तोर्निहितो गुहायाम्।
तमक्रतुः पश्यति वीतशोको धातुप्रसादान्महिमानमात्मनः ॥
कठोपनिषद

अणु से भी सूक्ष्मतर, महान् से भी महत्तर, ‘आत्मतत्त्व’ प्राणी की हृद्-गुहा में निहित है। जब मनुष्य अपने आपको कामादि संकल्पों से मुक्त एवं शोक से रहित कर लेता है तब वह ‘उसका’ दर्शन करता है। मानसिक प्रवृत्तियों की शुद्धि के प्रसाद से वह ‘आत्म-सत्ता’ की महिमा का दर्शन करता है।

अणोरणीयान् महतो महीयान्

नारायणोपनिशद्

वह सुक्ष्म से भी सुक्ष्म है और स्थल से भी स्थुल

अणोरणु महच्चादिमहतो विश्वगद्भुवम्।
सैवान्तर्यामिता यस्य कस्तस्मात् पर ईश्वरः।।

आदि रामायण १.९२.२१

अणु से भी अणु और महत् से भी महान, अखिल विश्व का उत्पत्ति स्थान,वहीं सर्वत्र गतिमान है, कौन ईश्वर उसके ऊपर हो सकता है?

त्वत्तः परनापरम् अस्ति किंचित् नाणीयोन् ज्यायोःस्ति किंचित्।

स्कन्द पुराण

भगवान श्रीराम से पर और अपर कुछ भी नहीं है और भगवान श्री राम से सुक्ष्म और स्थुल कुछ भी नहीं है।

ं

14)

न तस्य प्रतिमा अस्ति

Verse 10 of the Mahanarayana Upanishad of the Krishna Yajur Veda

Nainamūrdhvaṃ na tiryañcaṃ na madhye parijagrabhat ।

Na tasyeśe kaścana tasya nāma mahadyaśaḥ ॥

No person ever grasped by his understanding the upward limit of this Paramatman, nor His limit across, nor His middle portion. His name is 'great glory' for no one limits His nature by definition.

In **Yajurveda 32:3 it says "Na tasya Pratima asti**" – "There is no one who is equivalent to Him

नैनमूर्ध्वं न तिर्यञ्चं न मध्ये न परिजग्रभत् ।

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद् यशः ॥१९॥

Swetsweshtwar upanishad

19. He cannot be seen, neither above, nor across, nor in the middle. He is beyond grasp. There is no image that is true to His from. His name is glory itself.

रामाद् विशिष्टः कोऽन्योऽस्ति कश्चित् सौमित्रिणा समः

(Śrīmad Vālmiki Rāmayan 5.39.53)

“Who else is greater than Śrī Rāmā? And who else is equal to even Lakshmana?

[Means Śrī Rāmā is free from anyone equal to or greater than him, and there is none equal to even Lakshmana.]”

रुद्रो दिशति यन्मंत्र यस्य नाम महद् यशः।
तस्य नास्ति उपमा क्कापि तं रामं राघवं भजे ।।

Padmapuran uttarakhand

Whose mantra is given by rudra as diksha, whose name is verily great and to whom , there is no equivalent,I salute to that bhagwan shri Ramchandra.

नेदं यशो रघुपतेः सुरयाच्ञयाऽऽत्त
लीलातनोरधिकसाम्यविमुक्तधाम्नः।
रक्षोवध जलधिबन्धनमस्त्रपूगैः किं
तस्य शत्रुहनने कपयः सहायाः।।

Nedaṁ yaśo raghupateḥ sura-yācñayātta-

Līlā-tanor adhika-sāmya-vimukta-dhāmnaḥ.

Rakṣo-vadho jaladhi-bandhanam astra-pūgaiḥ
Kiṁ tasya śatru-hanane kapayaḥ sahāyāḥ..

(Śrīmad Bhāgwatām Mahāpurān 9.11.20)

Parikshit! **There is no one like Lord Shri Raghuvar, then how can anyone be greater than him.** He had done this Leela-Vigraha only by the prayers of the gods. In such a situation, it is not a matter of great pride for Raghuvansh-Shiromani that he killed the demons with weapons or built a bridge over the sea. Well, did they need the help of monkeys to kill the enemies?

रामात् नास्ति परोदेवो रामात् नास्ति परंव्रतम्

(Padmā Puranā, Pātālkhand 34/41A)

No God is superior than Śrī Rāma; No penance has greater fruit than Śrī Rāma.

रामेण सद्दशो देव न भुतो न भविष्यति।

Anand ramayan

There was no god nor there will be any god who is equal to bhagwan shri Ramchandra.

दिविषत्कन्यका राम गायन्ति भवतो यशः।
वेदैरपि न निर्णयं यस्य नाम महद् यशः।।

आदि रामायण

हे राम! स्वर्गीय कन्याएं आपकी यशगान करती है तथा वेद भी जिन्हें नहीं जान पाते क्योंकि आप नाम महान यश है।

न राघव समोदेवः क्कापि ब्रह्माण्ड गोलके।

Brihad ramayan

There was no god nor there will be any god who is equal to bhagwan shri Ramchandra.

15)
ईशावास्य इदम् सर्वम्

ईशाद्यष्टोत्तरशतवेदान्तपटलाशयम् ।
मुक्तिकोपनिषद्वेद्यं रामचन्द्रपदं भजे ॥

Muktika upanishad

All the upanishad starting from ishavasya upanishad are devoted to one and only bhagwan shri Ramchandra

ईशावास्य इदम् सर्वम् भवता गुण सिन्धुना।
त्रैलोक्यबन्धना राम सततं करुणात्मना।।

आदि रामायण

ईशावास्य यह सब आपके द्वारा है। हे भगवान श्री राम!आप गुणों तथा करुणा के सागर हैं, आप तीनों लोकों के मित्र हैं।

16)

From vedas

स एव नेति नेति इति व्याख्यातं निह्यते यतः।
सर्वमग्राह्यभावेण हेतुनाजं प्रकाशते।।

(अथर्ववेदीय श्रुति माण्डुक्योपनिशद atharvavediya Shruti mandukyopnishad)

क्योंकि स एष नेति नेति इति (वह यह नहीं यह नहीं है) इत्यादि श्रुति आत्मा के अग्राह्यत्व के कारण (उसके विषय में) पहले बतलाते हुए सभी भावों का निधन करती है, अतः इस (निषेध रुप) हेतु द्वारा ही अजन्मा आत्मा प्रकाशित होता है।

Shruti destroys (by saying neti neti) all the senses while telling (about him) first because of the inadmissibility of the soul, so the unborn soul is revealed through this (prohibition form).

परं पदं वैष्णवमामनन्ति तद् यन् नेति नेति इत्यतदुत्सिसृक्षवः ।
विसृज्य दौरात्म्यमनन्यसौहृदा हृदोपगुह्यार्हपदं पदे पदे ॥ १८ ॥

SB 2.2 18

The transcendentalists desire to avoid everything godless, for they know that supreme situation in which everything is related with the Supreme Lord Shri Ram. Therefore a pure devotee who is in absolute harmony with the Lord does not create perplexities, but worships the lotus feet of the Lord at every moment, taking them into his heart.

ततः परं परब्रह्म विद्धि राम सनातनम्।

सद् वेदैरपि वेदान्तैः नेति नेति इति गीयते।।

Bhusundi ramayan

Beyond that, know Shri Ram as eternal Supreme Brahman. Even the true Vedas and Vedanta sing his glories as Neti Neti.

वेद तथा वेदान्त भी जिन्हें नेति नेति करके गाती है, वो कोई और नहीं परात्पर परंब्रह्म सच्चिदानन्द स्वरूप भगवान श्री राम ही है।

नेति नेति जेहि बेद निरूपा। निजानंद निरुपाधि अनूपा॥
संभु बिरंचि बिष्नु भगवाना। उपजहिं जासु अंस तें नाना॥

(#इति_रामचरितमानस_बालकाण्ड) ramcharitmanas

जिन्हें वेद 'नेति-नेति' (यह भी नहीं, यह भी नहीं) कहकर श्री राम का ही निरूपण करते हैं। जो आनंदस्वरूप, उपाधिरहित और अनुपम हैं एवं जिनके अंश से अनेक शिव, ब्रह्मा और विष्णु भगवान प्रकट होते हैं।

Whom the Vedas refer to Shri Ram by saying ‘neti-neti’ (not this, not this also). Who is blissful, titleless and unique and from whose part many Lord Shiva, Brahma and Vishnu appear.

असंख्य मित्रवत्तजो वेदा अपि न य विदुः।
सर्वं निरक्षरातीतो रामो परातरात्परः।।

महा रामायण

वेद भी जिन्हें नेति नेति कहकर नहीं जानती वे निरक्षरातीत भगवान श्री राम हैं।

17)

महतः परमव्यक्तमव्यक्तात्पुरुषः परः।
पुरुषान्न परं किंचित्सा काष्ठा सा परा गतिः ॥

Katha upanishad

सा गतिः सा परा काष्ठा भक्तानां स्निग्धचेतसाम्।

यस्य स्वधाम एव वृहदित्यद्धा श्रृतिरवोचत।।

Aadi Ramayan

That is the path, that is the pinnacle of the devotees of affectionate minds, whose own abode is the greatest (साकेत लोक)said Sruti.

18)

अण्डपरिपालकमहाविष्णोः

स्थितिप्रलयावादिविराट्पुरुषस्याहोरात्रिसंज्ञकौ ते अहोरात्रे

एकं दिनं भवति । एवं दिनपक्षमाससंवत्सरादिभेदाच्च

तदीयमानेन शतकोटिवत्सरकालस्तस्य स्थितिरुच्यते । स्थित्यन्ते

आदिविराट्पुरुषः स्वांशमायोपाधिकनारायणमभ्येति ।

तस्य विराट्पुरुषस्य यावत्स्थितिकालस्तावत्प्रलयो भवति । प्रलये

सर्वशून्यं भवति । विराट्स्थितिप्रलयौ

मूलाविद्याण्डपरिपालक-

स्यादिनारायणस्याहोरात्रिसंज्ञकौ । ते अहोरात्रे एकं दिनं भवति ।

एवं दिनपक्षमाससंवत्सरादिभेदाच्च तदीयमानेन

शतकोटिवत्सरकालस्तस्य स्थितिरुच्यते । स्थित्यन्ते त्रिपाद्विभूतिनारायण

स्येच्छावशान्निमेषो जायते । तस्मान्मूलाविद्याण्डस्य

सावरणस्य विलयो भवति । ततः सविलासमूलविद्या

सर्वकार्योपाधिसमन्विता सदसद्विलक्षणानिर्वाच्या

लक्षणशून्याविर्भावतिरोभावात्मिकानाद्यखिलकारण-

कारणानन्तमहामायाविशेषणविशेषिता

परमसूक्ष्ममूलकारणमव्यक्तं विशति ।

Tripadvibhuti maha narayan upanishad

Maha Vishnu → aadi Virat purusha → aadi narayan → tripad Narayan aka Shri Ram

महा विष्णु → आदि विराट पुरुष → आदि नारायण → त्रिपाद विभुति नारायण अर्थात श्री राम

तत् त्रिपाद् नारायणाख्यं स्वमात्रम् वशिष्यते ॥

त्रिपाद् महानारायणोपनिषद

That tripad Supreme Personality of Godhead, known as Nārāyaṇa, remains His own.

19)

यथा नामी वाचकेन नाम्ना योऽभिमुखो भवेत् ।
तथा बीजात्मको मन्त्रो मन्त्रिणोऽभिमुखो भवेत् ॥

Ram tapani upanishad

जिस प्रकार एक नाम का उपयोग उस व्यक्ति का वर्णन करने के लिए किया जाता है जिसका सामना एक नाम से होता है। इसी प्रकार, जब राम नाम मंत्र का जाप किया जाता है, तो भगवान श्री रामचन्द्र जप करने वाले के पास आते हैं।

Just as a name is used to describe a person who is faced with a name. Similarly,when the mantra ram naam is chanted, bhagwan shri Ramchandra comes to chanter.

वाच्यश्श्रीरामचन्द्रस्तु वाचको नाम संस्मृतम् ।
वाच्य वाचको सम्बन्धो नित्यम् एव न संशयः।।

सौर संहिता

भगवान श्रीरामचन्द्र वाच्य हैं और श्रीराम नाम वाचक है। वाच्य और वाचक में नित्य सेव्य और सेवक का संबंध है। इस बात में कोई भी संशय नहीं है।

Lord Shri Ramchandra is the vachya and Shri Ram’s name is the vachak. There is a daily relation between the speaker and the listener, that of the lord and the servant. There is no doubt in this matter.

रामेति द्वयक्षरं नाम मानभंगपिनाकिनः।
अभेदो बोध्यते तेन सततं नामनामिनो।।

Lomesh samhita

दो अक्षरी मंत्र राम नाम ने शिव शंकर का मान भंग किया।
इससे प्रतीत होता है कि राम और राम नाम दोनों अभेद है।

The two-syllable mantra named Ram defamed Shiv Shankar. From this it appears that both Ram and the name Ram are inseparable.

20)

Purush Sukta and shri sukta

पुजा पुरुष सुक्तैश्च राघवस्य प्रचक्षते।
श्रीसुक्तैः जानकी पुजा कार्य्या सा साधकोत्तमैः।।

बृहद् विष्णु पुराण १९.२२०

महान साधकों को श्रीराम का पुजा पुरुष सुक्त के द्वारा करने चाहिए और माता जानकी का पुजा श्रीसुक्त के द्वारा करना चाहिए।

21)

**यदैकमात्मानमनेकधैव विभज्य विश्वं व्यतनोरमूर्ते ।
तदैवभानोवि रश्मयोऽमी त्वत्तोवयं रामविनिस्सृता हि॥**

Skand Puran Nirvana khand

Lord Sri Vishnu says to Sri Ram:—

O Sri Ram! At the time when you expand the world by dividing your one form into many forms, at that time we emerge from you just as rays are transmitted from the sun.

श्रीराम एव सर्व कारणं तस्य रूप द्वयं परिछिन्न मपरिछिन्नं परिछिन्न स्वरूपेण साकेत प्रमदावने तिष्ठन रास मेव करोति द्वितीयं स्वरूपं जगदुपत्वादेः कारणं तद्दक्षिणांगात्क्षाराब्धि शायी वामांगाद्रमा वैकुण्ठवासीति हृदयात्पर नारायणो वभूव चरणाभ्यां वदरिको पवन स्थायी शृङ्गारान्नन्दनन्दन इति ।

Atharvaveda Shruti viswambar upanishad

श्रीराम ही सब के कारण रूप हैं। उन श्रीरामजी के दो स्वरूप है, एक परिछिन्न रूप दूसरा अपरिछिन्न, प्रथम परिछिन्न रुप से श्रीरामजी साकेत लोक में प्रमोद्वन में रह कर केवल रासलीला करते हैं, द्वितीय अपरिछिन्न स्वरूप से संसार की उत्पत्ति का कारण हैं। उनके दहिने अंग से क्षीर समुद्र वासी अष्टभुजा भूमा पुरुष हुए हैं, वामांग से रमा वैकुण्ठ वासी हुए हैं। हृदय से परनारायण अर्थात् विरजा नदी के पार जो नारायण रहते हैं। चरणों से बद्रीबन निवासी नर नारायण हुए हैं, शृङ्गार से नन्दनन्दन श्रीकृष्णजी हुए हैं।

एकोऽपि स त्वं बहुरुपेण दृश्यः सन्नेव राघव त्रिजगद् विग्रहोऽसि।

Aadi Ramayan 1.68.9a

एकोऽहमेव बहुधा भवयेमितीक्षणं ते नाथ सदैव यस्मिन्।

Aadi Ramayan 1.68.10a

O Shri Ram! You prevade the three worlds even though you are alone in many forms (para Narayan, ashtabhuja narayan, vishnu, sadashiva, param shiva, maha shiva etc)

22)

तमीश्वराणां परमं महेश्वरं तं देवतानां परमं च दैवतम्।
पतिं पतीनां परमं परस्ताद्विदाम देवं भुवनेशमीड्यम्॥

श्वेतश्वेतेश्वर उपनिषद

स ईश्वराणां परमो महेश्वरः पतिः पतीनां परमं च दैवतं

विश्वांभर उपनिषद

श्रीराम समस्त ईश्वरों के परमेश्वर और समस्त भगवानों के परम भगवान हैं।

23)
महा उपनिषद

यन्महोपनिषद्वेद्यं चिदाकाशतया स्थितम् ।
परमाद्वैतसाम्राज्यं तद्रामब्रह्म मे गतिः ॥

One who is alone known by Mahā Upaniṣad itself, the one who is situated in the highest abode in Tri-Pāad Vibhuti, who has Sui Juris Kingdom (Nitya Ayodhyā / Sāket).That Par-Brahm Śrī Rām is my ultimate Refuge.

महोपनिषद् सर्वा एकं राम प्रचक्षते।

आदि रामायण

संपुर्ण महोपनिषद् एकमात्र श्री राम के लिए समर्पित है।

महोपनिषदं विष्णोः संगृह्य कथयामि ते।
समना संसरिष्णुनामुन्मनास्मि मद् अर्थिनाम्।।

स्कन्द पुराण रामगीता

श्रीराम कहते हैं:- हे विष्णु! मैंने तुम्हें महा उपनिषद संक्षेप में बताया है। इस प्रकार लोक में जितनी उत्कृष्ट वस्तुएं हैं वे सब मैं ही हूं।

शुक उवाचः-

कल्पादौ भगवान रामः स्वेऽच्छामात्रेणचोदितः।

त्रैलोक्यं कृतवांचागादाविर्भाव प्रदर्शयन्।।

अमोघमुप्तबान्बीजमंशुं सप्तावर्णवेषु च।

हिरण्यगर्भसंकाशः सुर्यकोटि समप्रभः।।

ततश्चराचरस्यादौ तत्व सृष्टि विनिर्ममे।

तेषु चैतन्यमाधाय ब्रह्माण्डं संजघाट सः।।

उच्चावचानि भुतानि रचयामास विश्वकृत।

महीं रचितवान्देवः सप्तसागर संवृताम्।।

पर्वतान् विविधान्रम्यान्देवगन्धर्व भोगवान्।

संरासि रम्यरुपाणि राजहंसाश्रयाणि च।।

उत्फुल्लकमलामोदवारीणि रुचिराणि च।

मेरु रचितवांस्तत्र स्थानानि त्रिदिवौकसाम्।।

एवं कृत्वा जगत्सर्वं सदेवासुरमानुषम्।

देवानामसुराणाम् च मनुष्याणां सौख्यदम्।।

नारद पंचरात्र अन्तर्गत श्रीशुकसंहिता

शुकदेव जी कहते हैं:-

कल्प के आदि में श्रीराम ने अपनी इच्छामात्र की प्रेरणा से तीनों लोक अपने शरीर से उत्पन्न किए। वहां अमोघ वैष्णवी वीर्य तेज संयुक्त इच्छा से जल प्रकट कर उसमें छोड़ दिया (एको नारायण आसीत् ...यहां उपनिषद, पैंगी ब्राह्मण)। वह वैष्णवी वीर्य इच्छा करके कोटि सुर्य से प्रकाश वाला स्वर्ण से कान्ति वाला एक गोलाकार अण्ड हो गया, और उस अण्ड से , सर्वलोको को रचनेवाले हिरण्यगर्भ भगवान ब्रह्मा रुप से प्रकट हुए (नारायणात् ब्रह्मा जायते)। उसी से भगवान शंकर प्रकट हुए (नारायणात् रुद्रो जायते)। उसी से सब चराचर पैदा हुए, उसी चैतन्य स्थापन कर कोटि ब्रह्माण्ड रचना हुआ तथा ऊंच नीच योनि को ब्रह्मा रचते गए और सात सागर से युक्त पृथ्वी को रचा तथा देव गंधर्व के भोगवान नाना प्रकार के सुंदर पर्वत रचे।नाना प्रकार के कमल रचे। लक्षयोजन वाला मेरु पर्वत रचा।